Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 13, Issue No. 1, April-2017, ISSN 2230-7540

अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों को दी जाने वाली सुविधाओं का अध्ययन

Varsha[1]* Dr. Rajbir Singh[2]

[1] Research Scholar, Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan

[2] HOD Department of Political Science G.G.D.S.D. College, Palwal Haryana

सार – अनु. जाति व जनजाति शब्द का अर्थ उस मानव वर्ग या जाति से है जिसे केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारें एक पिछड़े वर्ग के रूप में घोषित कर चुके है। जिसके सम्बन्ध में शिक्षा विभार्गके पास एक सूची है जिससे इस वर्ग के व्यक्तियों को कुछ समय तक विकास के लिये विशेष सुविधाएँ दी गई हैं। अर्थात् अनु. जाति एवं अनु. जनजाति शब्द से अभिप्राय इन जातियों से है जिन्हें भारतीय संविधान की धारा 341 में अनु. जाति एवं जनजाति कहा जाता है।

----------X----------

प्रस्तावनाः

मजूमदार एवं मैडम (2002-5) के अनुसार परिवार की शाक्षिक भूमिका को कभी भी नकारा नहीं जा सकता हैं सच्चिदानन्द एवं सिन्हा (2009-155) ने निष्कर्ष निकाला है कि परिवार की आर्थिक स्थिति बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि में अहम कारक है। खान एवं चैपड़ा (2004) ने भी सामाजिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि में सम्बन्ध बताया हैं

अतः किसी जाति विशेष में भी शैक्षिक उपलब्धियाँ पारिवारिक परिस्थितियों के अनुसार भिन्न हो सकती हैं शिक्षा के समस्त रूपों में परिवार मुख्य आधारभूत एवं सार्वभौमिक हैं हमें उन कारकों को सामने लाना है जो शिक्षा को पारिवारिक स्तर पर प्रभावित करते हं। किसी भी समाज में बच्चों के व्यक्तित्व एवं अच्छाई को बनाने में परिवार की भूमिका सर्वोपरि होती हैं परिवार बच्चों की सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करवाने के लिये उन्हें प्रेरित करता है अतः कहा जा सकता है कि परिवार बच्चों के लिये प्रथम शैक्षणिक संस्था है। परिवार के अलावा अभिभावकों की जागरूकता भी इन्हें प्रेरित करती हैं

औपचारिक शिक्षाओं की संस्था विद्यालय इन बच्चों को भविष्य की आर्थिक स्थिति के लिये तैयार करते है। बच्चों को विद्यालय में गृहकार्य दिया जाता है इस सम्बन्ध में माता-पिता की शाक्षणिक योग्यता एवं घर का वातावरण, सामाजिक-आर्थिक स्थिति उन्हें प्रेरित करती है कई अध्ययन इस सम्बन्ध में बताते है- यूनिसेफ मैग्जीन (2005-13) इस निष्कर्ष पर पहुँची कि जिन बच्चों के माता-पिता विद्यालय में थे वे अपने बच्चों को भी विद्यालय भेजना पसन्द करते हैं और बच्चों की औपचारिक शिक्षा में मदद करते हैं। सच्चिदानन्द एवं सिन्हा (2009-155-213) ने भी यही व्यक्त किया है कि अनु0 जाति एवं जनजाति के उन्हीं माता-पिता के बच्चे ज्यादा विद्यालय जाते है जो थोड़े लिखे होते हैं। दुग्गल (2002) ने भी यही कहा है कि बच्चों के विद्यालय पंजीकरण एवं माता-पिता की शिक्षा का सीधा सम्बन्ध है।

पाण्डा (2002) ने अनु0 जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मुख्य प्रभाव में अभिभावकों की अशिक्षा और परिवार की स्थिति को माना है। सिमिलरी देवी (2005) के शोध के अनुसार भी घर का वातावरण अनु0 जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शाक्षिक उपलब्धि में बाधा डालता है। राव (2007) के अनुसार अनु0 जाति व जनजाति के विद्यार्थियों की शाक्षिक आदतों पर सामाजिक-आर्थिक स्तर का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। चिन्नापन (2007: 29) के शोध अध्ययन के अनुसार माता-पिता के व्यवसायिक स्तर और बच्चों की शैक्षिक का आपस में निकट सम्बन्ध हं। डेव (2008: 43) के अनुसार जिन विद्यार्थियों का घरेलू कार्यों एवं सामाजिक वातावरण के कारण । में यह भी बताया कि कभी-कभी उन विद्यार्थियों की समस्याएँ बहुत ज्यादा जाती है जब उनके अभिभावक नशेबाज, अशिक्षित आार आर्थिक स्थिति अच्छी नही होती है तथा कुछ अध्ययनों जासे डेमिनिक

www.ignited.in

(2005) ने एक शोध अध्ययन द्वारा पाया गया बालकों की शैक्षिक उपलब्धि और विद्यालयी वातावरण के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध होता हैं अतः शोधार्थी के मस्तिष्क में यह अन्तद्वन्द्व की स्थिति उत्पन्न हुई कि क्या वास्तव में अनु0जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयुक्त चरों के मध्य भिन्नता पाई जाती है अथवा नहीं। साथ ही शोधार्थी के संज्ञान में अभी तक कोई ऐसा शोध कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है जो इन सभी चरों को अनु0जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के साथ रखकर किया गया हो तथा इन सभी के आपस में सम्बन्ध पर प्रकाश डालता हो।

अनुसूचित जातियों के विद्यार्थियों को दी जाने वाली सुविधाओं का अध्ययन

उपरोक्त विवेचन के फलस्वरूप शोधार्थी के मस्तिष्क में कुछ स्वाभाविक जिज्ञासायें एवं प्रश्न चिन्ह उत्पन्न हुयें जो प्रस्तुत शोध समस्या के चयन का कारण बने वह जिज्ञासायें एवं प्रश्न चिन्ह निम्न हैं-

1. क्या अनु0जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण में भिन्नता होती है?
2. क्या अनु0जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर में भिन्नता होती है?
3. क्या अनु0जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिप्रेरणा में विभिन्नता प्रदर्शित होती हैं?
4. क्या अनु0जाति एवं जनजाति के विद्यार्थियों की शाक्षिक उपलब्धि में अन्तर होता है?

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तरों की उपयोगिता अनु0जाति एवं जनजाति के विद्यार्थि यों के लिये इस कारणवश है क्योंकि विद्यार्थियों की शाक्षिक उपलब्धि में ये सभी चर आपस में प्रभाव डालते हैं पारिवारिक वातावरण अपने बच्चों की अन्तः क्रियाओं को धनात्मक/ऋणात्मक रूप में प्रभावित करता है यथा बालक परिवार स ही प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होता है। परिवार के वातावरण से बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है।

एनास्टासी (2001) के अनुसार- "शाक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त सफलता के स्तर का वह मूल्यांकन है जो विद्यार्थियों के शैक्षिक निर्देशों को समझने के प्रयास एवं उनके स्तर व आयु के अनुसार निर्धारित पाठ्यक्रम के लक्ष्यों की प्राप्ति से अभिव्यक्त होता है। जिसका परिणाम उनको वार्षिक परीक्षा में किए गए कार्यों से मिलता है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि से अभिप्राय विद्यार्थियों के कक्षा 10 की बोर्ड परीक्षा के प्राप्तांकों से लिया गया है।

परिवार बालकों की प्रथम पाठशाला होती है जहाँ उसका व्यक्तित्व आकार ग्रहण करता है। सभी रूचियों, आदतों, दृष्टिकोणों एवं धारणाओं के विकास में पारिवारिक वातावरण की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पारिवारिक सदस्यों द्वारा प्रदत्त निर्देश, प्रेरणा, सहयोग, प्रोत्साहन आदि मिलकर पारिवारिक वातावरण बनाते है। जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की शाक्षिक उपलब्धि पर अवश्य दृष्टिगोचर होता है।

बालक समाज में रहता है जिसके मानदण्ड, सम्बन्ध, परम्पराऐं, मान्यतायें आदि अप्रत्यक्ष रूप से बालक के विकास को प्रभावित करते हैं बालक जिस प्रकार के वातावरण में रहता है उसका सामाजिक विकास वैसा ही होता है। सामाजिक-आर्थिक वातावरण का प्रमुख रूप से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव दिखाई देता है।

शोध अध्ययन में शैक्षिक अभिप्रेरणा से अभिप्राय बालक को रूचियों, आदतों, प्रेरणा, शिक्षण कौशल, पाठ्यक्रम, शैक्षिक निर्देशन के लिये उत्साहित करन से सम्बन्धित हैं जिसके आधार पर बालकों की शाक्षिक अभिप्रेरणा को वर्णित किया जा सकता हैं

शोध अध्ययन के परिणाम के आधार पर अनु0जाति व जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के बारे में जानकारी हो सकेगी। अनु0जाति व जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले पारिवारिक वातावरण का प्रभाव समझ सकेंगे। प्रस्तावित शोध अध्ययनों के माध्यम से पारिवारिक वातावरण में सुधार के लिये सुझाव दे सकेंगे। प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से अनु0जाति व जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले सामाजिक-आर्थिक स्तर के प्रभाव की जानकारी कर सकेंगे। समाज में रहने वाले अनु0जाति व जनजाति के व्यक्ति भी जागरूक हो सकेंगे।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन के परिणामस्वरूप अनु0जाति व जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव की जानकारी हो सकेगी। प्रस्तुत शोध

अध्ययन के माध्यम से आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों से शिक्षक, अभिभावक, प्रबंधक सभी परिचित हो सकेंगे। शोध अध्ययन के द्वारा शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े विद्यार्थियों के लिये उपचारात्मक शिक्षण कार्यक्रम की विशेष व्यवस्थाओं से लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

संदर्भ-ग्रन्थ सूची

1. दावेकर, वी.पी., सम्पादक, सोशल रिफार्म मूवमेण्ट इन इण्डिया-ए-हिस्टोरीकल परस्पेक्टिव, पोपुलर पब्लिकाशन, बम्बई, प्रथम संस्करण, 2001

2. दुबे, रविकान्त, आधुनिक लोक प्रशासन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा-3, 2008

3. इनसाईक्लोपीडिया ऑफ़ सोशल वर्क इन इण्डिया, वॉल्यूम 1-4, मिनिस्ट्र ऑफ़ वेलफेयर, गवर्नमेण्ट ऑफ़ इण्डिया, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय, भारत सरकार, पटियाला हाऊस, नई दिल्ली, 2007

4. फडिया, बी.एल., लोकप्रशासन, आगरा, साहित्य भवन, 2005

5. गैन्गराडा, का.डी., सम्पादित, द्वितीय खण्ड, सोशल लेजिलेशन इन इण्डिया कन्सेप्ट पब्लिशिंगकम्पनी, दिल्ली, 2008

6. गिल, एस.एस., दि पैथालाजी ऑफ़ करप्शन, हार्पर कालिन्स पब्लिशर्स, इण्डिया, नई दिल्ली, 2008

Corresponding Author

Varsha*

Research Scholar, Singhania University, Jhunjhunu, Rajasthan